॥ अँग्रेज़ी पंडित ॥

(एन. वी. मणी, U. P.)

केरल में एक अँग्रेज़ी साहब आया । उसका बटलर एक मलयाली था । उस मलयाली को अँग्रेज़ी बिलकुल नहीं आती थी । साहब ने तुनक कर मलयाली से कहा, "कहीं जाकर अँग्रेज़ी सीखकर आओ । नहीं तो यह नौकरी नहीं मिलेगी ।"

"पेट जो न कराये सो थोडा ।" झट मलयाली अँग्रेज़ी सीखने गया । कोई भी उस बेचारे को पूछनेवाला न था । अंत में वह एक छोटे-से शहर में पहुँचा । वहाँ एक आदमी ने उनसे पूछा, "अरे भाई! कहाँ जा रहे हो?" उत्तर मिला, "सम्माननीय दोस्त! मैं तो अँग्रेज़ी पढने जा रहा हूँ । कोई उस्ताद मुझको नहीं मिला । सब लोग मुझे टाल देते हैं ।"

वह आदमी खिलखिला कर हँस पडा और कहा, "अरे बेवकूफ! अँग्रेज़ी पढाना क्या इतना मुश्किल है? मैं तुमको सिखाऊँगा । यहाँ आओ और बैठो । लेकिन उसके पहले मैं पाँच हज़ार रूपये फीस चाहता हूँ । जाओ और साहब से माँगो ।"

तुरंत पैसा उस आदमी को मिला । आदमी ने कहा, "भाई! मैं एक दिन में तुमको अँग्रेज़ी पढाऊँगा । अँग्रेज़ी भाषा केवल यह है कि अगर तुमसे कोई सवाल पूछे तो तुम्हें "येस" कहना चाहिए । दूसरे सवाल का जवाब "नो" कहना । और कोई नियम नहीं । दूसरे शब्दों में पहले सवाल को "येस" और दूसरे को "नो" कहना चाहिए । यही अँग्रेज़ी है । क्या समझे?"

बेचारा मलयाली खुशी से फूल गया । उसका आनन्द असीम हो गया । झट दौडकर साहब के सामने हाजिर हुआ । साहब ने पूछा, "हाव यू स्टडीड इंग्लीष, वेरी वेल?" प्रश्न पूछने पर जल्दी जवाब मिला "येस" । तब साहब ने फिर पूछा, "ईस देर एनि डौट?" मलयाली ने साभिमान कहा, "नो" । साहब ने समझा कि मलयाली दर असल अँग्रेज़ी पढ चुका है ।

एक दिन साहब की अँगूठी खो गयी । तब "बटलर" से उसने पूछा, "हाव यू सीन दि रिंग?" झट मलयाली बटलर ने कहा "येस" । खुश होकर साहब ने कहा, "देन गिव ईट टु मी ।" मलयाली ने कहा, "नो" । साहब की मुखाकृति गंभीर हो उठी ।

बात बढी । नतीजा यह था कि वह बात कचहरी पहुँची । वहाँ से मालूम हुआ कि वास्तव में बटलर अँग्रेज़ी नहीं जानता था ।

साहब ने हैरान होकर कहा, "हाय मलयाली! हमारे पाँच हज़ार रूपये डूब गये ।" सब लोग साहब की बेवकूफी पर हँस पडे ।

[एक सुनी सुनायी कहानी]

थी ताकि आज तो खाली पेट स्कूल न जाए । परंतु वह दूध बिल्ली पी गई । रामू को आज भी भूखा ही स्कूल जाना पड़ा ।

रामू का स्कूल गाँव से दो मील दूर था । जब वह सोने लगा तो उसके पाव लडखडा ने लगे । भूखसे उसका हाल बहुत बुरा हो रहा था । वह आगे बढता गया पर उसे कुछ सुझाई नहीं देता था । सामने से एक कार आ रही थी । और बेचारा रामू एक चींख के साथ कार के नीचे आ गया । उसे असपताल पहुँचा दिया । वह जब चंगा होकर आया तो वह बदनसीब अपनी शिक्षा पुरी नहीं कर सका । और पेट पालने केलिए तांगा चलाने लगा ।

* * *

कानपूर से एक भारी मेला लगा था । मनुष्य दूर दूर से आ रहे थे । महाजन का गाँव भी नजदीक था । इस लिए उसके बच्चे भी जाने की जिद कर रहे थे । इनके नौकर सुरेश के जाने का समाचार सुनकर वह और भी हठ करने लगे । आखिर संध्या तक लाने का बचन लेकर उन्हें सुरेश के साथ भेज दिया ।

महाजन दूकान पर बैठा था । संध्या हो चुकी थी । यकायक लोगों के दौडकर आने पर घबरा गया । आखिर एक को रोक कर पूछा, क्या इस प्रकार क्यों भाग रहे हो । उसने उत्तर दिया । "शहर में दंगा हो गया है । पठान लूट मार कर रहे हैं और हिंदू मुसलमानों में खून की होली खेली जा रही है । आखिर दंगे पर काबू पाने के लिए पुलिस को गोली चलानी पडी । दस, बारह मनुष्य मर गये हैं । और बहुत से घायल हो गये ।" यह कहकर वह हाँफ़ता हुआ चला गया ।

यह समाचार सुनकर वह दुकान बंद करके घर आया । और बच्चों की राह देखने लगा । शाम हो गई । आठ बज गये, नौ हुए मगर बच्चे वापस न आये । जैसे जैसे समय बीतता गया इसका दिल और घबराता गया । वह शहर भी नहीं जा सकता था । रात ज्यादा हो गयी थी । वह नौकर को गाली देने लगा । क्या उसकी शाम अभी तक नहीं आई । पर उसके हृदय को शांति न हुई । उसे अपने बच्चे ला शोंके बीच में तडपते नज़र आने लगे । वह घबराकर भीतर गया । और अपना सर हाथ पर रखकर सोच ने लगा । रात के ग्यारह बज चुके थे । वह मायूस हो चुका था । यकायक उसे गली से तांगा गुजरता हुआ जान पड़ा और थोडी देर बाद उसे दरवाजा खटखटाने की आवाज़ आई । द्वार खोला तो सामने अपने बेचों को देखा । उन्हें गले लगाकर तांगेवाले की ओर देखा तो हैरान हो गया । क्यों कि यह रामू था ।

रामू को देखकर इसका होश ठकाने न रहा । यह उसका पुराना 'पापी' था । बच्चे कह रहे थे । जब दंगा शुरू हुआ तो नौकर हमें छोड कर चला गया । जब गोली चली तो हम चीखने लगे । इतने में यह तांगेवाला झट हमें उठा ले गया । और दंगा शांत होने के बाद ले आया । महाजन यह सुनकर क्षमा मांगने के लिए तागे वाले की ओर मुडा । मगर वह जा चुका था । उसकी नज़र उस तरफ दौडने लगी जहाँ तांगा रात के भयानक अंधेरे को अपनी टिम टिमाती हुई रोशनी से चीरता हुआ जा रहा था ।

॥ चाण्डाल से भी नीच ॥

(एम. पी. वासुदेवन, II B. Sc.)

पहले एक ब्राह्मण रहते थे । उनका विचार था कि वे बडे विद्वान आदमी हैं । वे अकेले एक नदी के किनारे एक झोंपड़ी में रहते थे । उनकी आज्ञा थी कि, कोई उनकी कुटी के पास न आवें । अगर कोई अनजान में उधर आ जाता तो शोर मचाते, "हट चल, इधर मत आना, मुझे अशुद्ध मत कर" ।

एक दिन एक धोबी उस नदी में कपडे धोने आया । वह उस जगह के लिये नया था । इसलिये वह हमारे ब्राह्मण के बारे में कुछ नहीं जानता था । वह मामूली तौर पर नदी में कपडे धोने लगा । ब्राह्मण ने आवाज़ सुनकर शोर मचाया, "कौन है उधर ? जलदी भाग जा नीच, नहीं तो मैं तुझे शाप दूँगा" ।

धोबी कपडे पत्थर पर पीटते जा रहा था । इसलिये उसने ब्राह्मण की झिडकियाँ नहीं सुनीं । वह बेचारा अपने काम में लगा रहा । तब ब्राह्मण को बहुत क्रोध आया । क्रोध से उनके ओठ हिलने लगे । वे धोबी के पास दौड आये और कहा, "गुस्ताख कहीं का, तू मेरी नहीं सुनता ? अच्छूत, मैं तुझे एक पाठ पढाऊँगा" । यह कहकर ब्राह्मण उस धोबी को मारने लगे । बेचारे ने क्षमायाचना की और ब्राह्मण को इस बात का विश्वास दिलाया कि वह फिर वहाँ नहीं आयेगा ।

जब धोबी धुलाई खतम करके चलने लगा तब ब्राह्मण उस नदी में नहाये और कुटी की ओर चलने लगे । तब उन्होंने धोबी को भी उस नदी में स्नान करते देखा । यह देखकर वे चौंक पडे और तुरंत धोबी के पास आकर उस से पूछा : "तुमने इस नदी में क्यों स्नान किया ?" उत्तर में धोबी ने पूछा : "आप क्यों नहाये ?"

ब्राह्मण को गुस्सा आया । उन्होंने आँखें लाल करके कहा : "क्या, तुम नहीं जानते ? तुम एक चाण्डाल हो और मैं एक कुलीन ब्राह्मण । मैं ने तुम्हारा स्पर्श किया, इसलिये फिर शुद्ध होने के लिये स्नान करना पडा ।

धोबी ने कुछ सोचकर मौके का अच्छा उपयोग किया । उसने उत्तर दिया : "ओ, पंडित स्वामी, जब आप ने मुझे मारा तब एक चाण्डाल से भी नीच आदमी ने मेरा स्पर्श किया । इसलिये मैंने स्नान किया ।

धोबी की इस बात पर ब्राह्मण बहुत लज्जित हुए । वे आश्रम को लौटे और धोबी की उस बात पर विचार करने लगे । आखिर ब्राह्मण ने तथ्य को समझ लिया । उन्होंने नम्रवदन होकर अपने से कहा : "धोबी का कहना ठीक है, और गलती मेरी है । वे तुरंत ही दौडकर धोबी के पास आये, और उसके पैर पकड कर क्षमा याचना की ।

॥ हम पथिक हैं ॥

(वी. मुहम्मद बदरुद्दीन)

हम पथिक हैं, अविराम पथिक,
हम चलते सदा, पर लगते अथक ।
शिविर दूर है, राह विशाल
मृगतृष्णा जैसी है मंजिल !

दिल से हम घायल हैं, फिर भी
चलते हैं हम हर दम भी ।
जो मिलना है, पता न वही
जीवन का है राह यही ?

चलते चलते लगते तंग
मार्ग हमारे और उमंग ।
करती पुकार लेटकर उसे
लेकिन कौन सुने मन से ?

हम में आँसू रहते जब तक
रोते ही रहते हैं, तब तक ।
पिघल जाता है पत्थर, पर
है कौन सदय ? हमारे ऊपर ।

आशा यही है पाना मंज़िल
पर निराश है राह सकल ।
चलते हैं तेज़ी से जब हम
पड़ता आगे बादल भीम ।

चलते चलते लगते भारी
पाँव, और मंज़िल हमारी,
है पाता कुछ, अक्सर पाता
नहीं वही चीज़, यह है जीवन !

॥ साक्षात्कार ॥

(पी. वी. जनार्दनन, I B. Sc.)

है सुन्दर अनुपम तार तू,
है चमकता रोज़-रोज़ तू;
है सपनों के फूल खिला रहा,
है सुन्दर वसंत ही आ रहा ।

कितने हमने सपने देखे !
कितने नाच-नचा कर खेले !
समझे कि, हम आगे गये हैं !
समझे कि इक रैन साक्षात्कार है ।

हटा झट विपत्तियों को,
चढ़ाई कर विपत्तियों पर,
बढ़ा शीघ्र ही प्यार पर प्यार,
बहा सजनी प्यार के झर ॥

॥ यह दुनिया ॥

(सय्यद मुहम्मद खालिद बरमावर)

गरीब किसान आज बहुत दुखी था । कल उसके लडके की फीस भरनी थी । वे बहुत कष्ट सहन करके अपने बालक को पढ़ाते थे । यदि वह कल फीस नहीं अदा करेगा तो वह मैट्रिक परीक्षा में बैठ नहीं सकेगा । आखिर पति कातर दृष्टि से पत्नी की ओर देखकर बोला । क्या, भगवान हमारी अभिलाषा पूरी नहीं करेगा । कितना प्रयत्न करने पर भी २५ रूपये कहीं से भी नहीं मिले । पत्नी भी शौहर का मुंह देखने लगी । वह भी यह कष्ट दूर नहीं कर सकती थी ।

कुछ समय बाद लडका भी वहाँ आ गया । वह बहुत दुखी मालूम होता था । माँ-बाप उसके दुखी होने का कारण जानते थे । बाप ने आँसू बहाते हुए कहा कि बेटा तुम भी कुछ कोशिश करो । मैं कोशिश करके बेजार हो गया । क्या तुम्हारे कोई मित्र कुछ मदद नहीं कर सकते ।

बालक बोला " मैं अपने मित्र के आगे हाथ फैलाना नहीं चाहता । हाँ, मैं ने हमारे गाँव के महाजन से यह मदद करने को कहा । उसे विश्वास दिलाया । मगर वह काहे को देगा । वह हमारे रक्त चूसने के लिए इस दुनिया में आया है । जब मैं ने अपनी लाचारी जाहिर की तो उस ने हमारी उस गाय को बेचने की बात कही जिसके सहारे हम जीते हैं । यदि उसे बेच दें तो एक वक्त की रोटी भी मिलना कष्ट हो जाएगा ।

माँ बाप का विचार इस ओर आया ही न था । गाय की ओर विचार जाते ही उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे । एक आसरा था, जीवन का । उसे बेचने पर जीना कष्ट होता । और नहीं तो लडका परीक्षा में बैठ नहीं सकता था । बाप ने हृदय पर पत्थर रखकर कहा । जो भी पीडा आएगी देखी जाएगी । अब तुम अपनी फीस की फिक्र मत करो ।

लडका गाय को बेचना नहीं चाहता था परंतु पिता को निराश भी करना नहीं चाहत था । क्यों कि गाँव में पढ़े लिखे बहुत कम थे । बाप चाहते थे यदि बेटा कुछ पढ़ लेगा तो सरकारी नौकरी करने योग्य हो जायेंगा और हमारे कष्ट के दिन खतम होंगे । इसलिए वह गाय को लेकर महाजन के पास गया । महाजन केवल २० रूपये देने को तैयार हुआ । क्योंकि वह जानता था कि उस के सिवा कोई इसे नहीं ले सकता । और उसे रूपये की आवश्यकता है । गरीब रामू ने अपना आसरा बेचकर फीस भरी । मगर अब उसके परिवार का जीवन बहुत कष्ट से बीत रहा था । बाप में कमाने की भी शक्ति न थी । रामू पास होने के लिए बहुत प्रयत्न कर रहा था । मगर उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा ।

आज से उसकी परीक्षा आरंभ होनेवाली थी । उसने कल से कुछ खाया पिया न था । आज कहीं से उस की माँ थोडा सा दूध ले आई